कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

देवाधिदेव शिव-पार्वती
बैठे गोदी में गणाधिपति।
शिव हैं भोले भक्तों के लिए
तांडव से भस्मित असुरमति।।

कोलकाता-हावड़ा महानगर द्वारा आयोजित शिव पुराण कथा

शिव तत्त्व कल्याणकारी है, कथा तिहारी हितकारी है;
वनवासी का जीवन जीने-वाले शिव करुणाधारी हैं।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 34, अंक 2
अप्रैल-सितम्बर 2023 (विक्रम संवत् 2080)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : +91 33 4803 4533

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... शिवपुराण वनवासी... 2
- कथा व्यास आचार्य श्री ... 3
- आचार्य श्री विष्णुकांत जी महाराज... 4
- शिव-कथा समागम की झलकियाँ 5
- शिव महापुराण कथा का सार संदेश 7
- शिवपुराण कथा के पूर्व स्नेह मिलन... 12
- व्यक्ति का जीवन सफल ही... 15
- तूफान और बारिश पर भारी पड़ी... 16
- कविता .... डीलिस्टिंग करेंगे... 19
- भील बालिका कालीबाई खाट... 20
- काकुड़गाछी महिला समिति द्वारा... 21
- शबरी कन्या छात्रावास, रायपुर से... 22
- वनवासी कल्याण आश्रम से सुश्री... 23
- पूर्वांचल कल्याण आश्रम के... 24
- लेकटाउन महिला समिति द्वारा... 25
- राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की ध्येययात्रा... 26
- कविता ..... स्वतंत्रता दिवस... 28
- आदरणीय भगवती जी बागला... 29
- कथाव्यास मृदुलकांत जी द्वारा... 30
- अनुकरणीय 31
- बोधकथा..... मां से महान... 32

संपादकीय...

शिवपुराण वनवासी और वन संस्कृति की वन्दना है

सनातन, चिरन्तन और अमर पुराण है श्री शिव महापुराण! शिव महापुराण की रूद्र संहिता (पार्वती खंड) में उल्लेख मिलता है कि भगवान शिव सर्व सुंदर वृषभ, जिसे वेदों, शास्त्रों तथा महर्षियों ने धर्म कहा है, उस पर सवार होकर के धर्म वत्सल भगवान शिव जी संपूर्ण देवगणों और ऋषियों द्वारा सेवित होते हैं। भगवान शिव धर्म पर आरूढ हैं। धर्म उनके द्वारा अनुशासित और अनुप्राणित है। धर्म से समस्त राष्ट्र और संस्कृति का संचालन तथा संवर्धन होता है। 'धर्मेण रक्ष्यते राज्यम्' धर्म से ही राज्य की रक्षा होती है । धर्म तभी तक सत्य और शुभंकर है जब तक शिव तत्व द्वारा उसे चेतना प्राप्त हो रही है। शिव से अभिप्राय है मंगल। शिव सत्य का बोधक है। अज्ञानता से निवृत्ति और ज्ञान की प्रवृत्ति का नाम है शिव। विनाश में भी विकास का सूत्र है शिव। शिव प्रलय और प्रारंभ दोनों हैं।

राष्ट्र से अभिप्राय है 'वह व्यवस्था, जो संस्कृति और धर्म की प्रधानता से संवर्धित हो रही हो, राष्ट्र के मूल में शिव तत्व स्थित है। बिना शिवत्व के राष्ट्र ना तो संस्कृति को धारण कर सकता है और ना ही धर्म।

हमारा भारतवर्ष आनंदवन (काशी) में स्थित आदि विश्वेश्वर के परम पावन ज्योतिर्लिंग की उपासना करता है तो गिरिवर कैलाश के उत्तुंग शिखरों पर विराजमान कैलाशपति के आशीर्वाद का याचक बना रहता है। सुदूर तमिलनाडु की महाशक्ति भगवती कन्याकुमारी का वरण करके भगवान शिव मानों समुद्र और शिखर का नैसर्गिक संबंध स्थापित कर रहे हों। संपूर्ण भारत में स्थापित द्वादश ज्योतिर्लिंग हमारी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक संपन्नता को आज भी सुरक्षित कर रहे हैं।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता हावड़ा महानगर द्वारा परम पूज्य आचार्य मृदुलकांत शास्त्री जी के श्रीमुख से विगत 18 से 24 जुलाई तक आयोजित सप्तदिवसीय श्री शिवपुराण कथा के प्रति लोगों का रुझान अभूतपूर्व था। प्रतिदिन अपार जनसमूह एकत्रित होता था। महाराज श्री व्यासपीठ से प्रतिदिन आह्वान करते थे कि भगवान शिव वनवासियों के स्वाभाविक देवता हैं और शिवपुराण प्रकारान्तर से वनवासी और वन संस्कृति की ही वन्दना है। सदाशिव की पूजा तभी सार्थक होगी जब हम सदियों से उपेक्षित वनवासी को उसका प्राप्तव्य लौटायेंगे तथा उसे अंतरतम का स्नेह प्रदान करेंगे। महाराजश्री के आह्वान पर महानगरवासियों ने इस पवित्र कार्य के महत्व को जाना एवं खुले मन से वनवासी सेवा और संगठन कार्यों के लिए सहयोग किया। हम सबको इस पुनीत आयोजन की स्मृति आनन्द और पुलक से भर देती है। कल्याण आश्रम परिवार कामना करता है कि हमारे भीतर का शिवत्व सदैव जागृत रहे और हम प्रेरित हों, मनुष्यता को अर्पित हों, अपने संपूर्ण ऐश्वर्य मनुष्यता को अर्पित करते हुए धन्य हों। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

कथा व्यास आचार्य श्री मृदुल कांत जी शास्त्री: एक परिचय

भारतवर्ष के प्रमुख जगद्गुरुओं एवं संत-महात्माओं से आशीर्वाद प्राप्त आचार्य श्री मृदुल कांत जी महाराज हजारों वर्ष प्राचीन वैदिक, पौराणिक पांडित्य परंपरा के संवाहक हैं। आचार्य जी का जन्म 27 जनवरी, 1978 को श्री संकष्ट चतुर्थी तिथि को श्री धाम वृन्दावन में एक परंपरागत बृजवासी परिवार में हुआ।

आचार्य जी की परदादी श्रीमती दुर्गा देवी जी अलवर राजघराने के राजगुरु परिवार से, इनकी दादीजी श्रीमती शांति देवी जी भरतपुर व डीग राजघराने के राजगुरु परिवार से तथा माताजी श्रीमती लक्ष्मी देवी जी प्राचीन श्रीराधावल्लभ जी मंदिर के श्री गोस्वामी परिवार से संबन्धित होने के कारण आचार्य जी में अपने परिवार के वंशानुगत आध्यात्मिक परंपरा के गुण विद्यमान होने के साथ-साथ उपरोक्त तीनों संभ्रांत धार्मिक एवं विद्वत परिवारों के भी वंशानुगत आध्यात्मिक परंपरा के गुण आये हैं। इसीलिए आचार्य जी कई आध्यात्मिक परम्पराओं को संजोये हुए हैं तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान व ऊर्जा रखते हैं।

आचार्य जी ने जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज (श्री श्रीजी महाराज) से गुरुदीक्षा प्राप्त की है। आपने बाल्यकाल से ही वेदों व कर्मकांड का अध्ययन अपने पूज्यपिताजी आचार्य श्री विष्णुकांत जी महाराज एवं अन्य आचार्यों से प्राप्त किया। भागवत व अन्य पुराणों का अध्ययन परमपूज्य सदगुरुदेव श्री नेत्रपाल जी महाराज से प्राप्त किया। प्रसिद्ध संत स्वामी श्री अखंडानंद जी सरस्वती से उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिनके ज्ञान और विचार आज भी दुनिया को आलोकित करते हैं।

आचार्य जी ने आगरा विश्वविद्यालय से वाणिज्य एवं दर्शनशास्त्र विषय में मास्टर्स की उपाधि प्राप्त की है। उनमें आधुनिक विचारों और मूल्यों के साथ वैदिक धर्म के पारंपरिक मूल्यों का सामंजस्य स्थापित करने

की अद्भुत क्षमता है। आप न केवल वैदिक शास्त्रों में बल्कि आधुनिक शिक्षा में भी निपुण हैं।

आचार्य जी श्रीभागवत महापुराण, श्री शिव महापुराण, श्री हनुमान कथा और श्री हनुमान चालीसा जैसे कई अन्य दिव्य ग्रंथों के उपदेशक और मृदु वक्ता हैं। आचार्य जी पर श्री सुधांशु जी महाराज, साध्वी ऋतंभरा जी, गोपाल शरण देवाचार्य जी महाराज, श्री कौशलेंद्र ब्रह्मचारी जी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री वासुदेवानंद सरस्वती जी और जगद्गुरु शंकराचार्य जी, श्री निश्चलानंद जी महाराज जैसे सिद्ध लोगों का आशीर्वाद रहा है।

सनातन धर्म के प्रचार -प्रसार हेतु भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी कई स्थानों जैसे ब्राजील, यू.के., इटली, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रिया, फ्रांस, मॉरीशस, चीन, हांगकांग, सिंगापुर, इंडोनेशिया, यू.ए.ई., म्यांमार, नेपाल व श्रीलंका आदि देशों में सनातन धर्म के तीनों स्तरों - नामे रुचि, जीवेदया व वैष्णव सेवा - पर विभिन्न प्रकल्प संचालित किये जा रहे हैं। हजारों वर्ष पुरानी पांडित्य परम्परा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आचार्य जी अपने पूज्य पिताजी आचार्य श्री विष्णुकांत जी महाराज के मार्गदर्शन में ब्राह्मणों, वेदपाठियों एवं वैष्णवों को इस परिपाटी से जोड़ते रहे हैं।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा पुरुषोत्तम मास (श्रावण) में आयोजित सप्त दिवसीय श्री शिव महापुराण कथा का व्यासत्व स्वीकार कर आपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन किया है। कोलकाता-हावड़ा महानगर के सभी कार्यकर्ता आपके चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। ■

आचार्य श्री विष्णुकांत जी महाराज: एक परिचय

स्वनामधन्य आचार्य मृदुलकांत शास्त्री के पूज्य पिताश्री आचार्य श्री विष्णुकांत जी महाराज समस्त ब्रज क्षेत्र में सुविख्यात विज्ञ यज्ञाचार्य हैं। आपने बाल्यकाल से ही वैदिक शिक्षा का ज्ञान अपने पूज्य दादाजी श्री नरोत्तम लाल जी महाराज एवं अन्य धार्मिक गुरुओं से प्राप्त किया। तत्पश्चात संस्कृत विषय में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की। आप ज्योतिषशास्त्र एवं वास्तुशास्त्र विषय में भी पारंगत होने के कारण समस्त ब्रज क्षेत्र में विशेष ख्याति रखते हैं।

आपके द्धारा मंदिर में नियमित रूप से सम्पन्न कराये जाने वाले विभिन्न यज्ञों में से कुछ विशेष यज्ञ निम्नवत हैं:

1. 108 कुण्डी यज्ञ।
2. सपाद कोटि होमात्मक श्री गोपाल महायज्ञ।
3. श्री अतिरुद्र यज्ञ एवं श्री सहस्त्रचंडी यज्ञ आदि।

आपके द्वारा संपन्न कराये गए महायज्ञों में श्रीअखंडानंद सरस्वती जी महाराज, माँ श्री आनंदमयी जी, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री वासुदेवानंद जी महाराज, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज, धर्मरत्न श्री गोपालशरण देवाचार्य जी महाराज आदि के यहाँ सम्पन्न कराये गए महायज्ञ विशेष हैं।

हमारा अतीव सौभाग्य है कि कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय शिव महापुराण कथा में आप पूरे समय उपस्थित रहे एवं आपकी ही देखरेख में पूजन -अर्चन की समस्त क्रियाएं संपन्न हुई। ■

शिव-कथा समागम की झलकियाँ

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर समिति

सावन माह में धर्म-कर्म करने व शिव पूजा करने से अक्षय पुण्य मिलता है। अधिक मास में भगवान शिव और भगवान विष्णु की पूजा से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

★ पुरुलिया में महाविद्यालयीन छात्रों के लिये छात्रावास निर्माण के शुभ विचार से पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर के राष्ट्र कार्य में संलग्न कार्यकर्ताओं ने श्रावण मास में आने वाले पुरुषोत्तम मास में शिवमहापुराण कथा का आयोजन करने का मंगल संकल्प किया। इस संकल्प को साकार रूप प्रदान किया महान कथा वाचक सनातन धर्म के ध्वजवाहक आचार्य मृदुलकांत शास्त्री जी ने। तिथि तय हुई 18 जुलाई से 24 जुलाई 2023 और स्थान तय हुआ द स्टेडल, युवा भारती क्रीड़ांगण।

यह कथा नाना प्रकार से अन्य आयोज्य कथाओं से अलग थी। कथा श्रवण के क्रम में अनेक अद्भुत अद्वितीय प्रसंग ऐसे रहे जिन्हें साझा करके कृतार्थ होना अपना दायित्व मानती हूँ।

भावपूर्ण और प्रभावी कथा वाचन के लिए प्रसिद्ध आचार्य श्री ने इस कथा के लिए कुछ भी दक्षिणा नहीं ली। आपने कहा कि यह कथा राष्ट्रीय कार्य हेतु हो रही है इसलिए वे भी निमित्त बनना चाहते हैं।

★ आचार्य श्री की भावप्रवण कथा का प्रवाह पहले दिन से ही पूरे कोलकाता महानगर में प्रवाहित हो उठा। श्रोताओं के लिए स्टेडल कथा-मंडप छोटा पड़ गया। पूर सातों दिन बारिश होती रही, लेकिन कथा की रसधारा ऐसी बही कि 2 बजते ही कथा प्रेमियों के पग स्टेडल की ओर मुड़ उठते।

★ व्यास पीठ से महाराज श्री के अनुरोध से कथा प्रेमियों ने मुक्त हस्त से दान किया। महाराज श्री का वाक्य **"भगवद्प्रेमियों ऐसा करो कि कल्याण आश्रम एक नहीं दस छात्रावास बना पाए"**। आचार्य श्री के इस आह्वान ने दान की ऐसी भागीरथी बहाई कि कल्याण आश्रम कृतकृत्य हो उठा। रसीदें जो कटनी शुरू हुईं तो कथा विश्राम तक रुकी नहीं।

★ इस कथा में 121 रुद्री पाठ हुए और पूर्णाहुति के दिन सहस्रार्चन हुआ। पुरुषोत्तम मास की यह बड़ी उपलब्धि रही।

★ द्वादश ज्योतिर्लिंग के यजमानों द्वारा पूजन अर्चन और हवन तत्पश्चात कथा प्रेमियों द्वारा दर्शन कथा मण्डप को शिवालय का अद्भुत रूप प्रदान कर रहा था।

★ यह कथा समाज के सनातन धर्म प्रेमियों के सहयोग से आयोजित हुई। कथा के मुख्य यजमान बनने का सौभाग्य प्राप्त किया प्रसिद्ध उद्योगपति श्री संजय जी गुप्ता ने। कथा के सातों दिन के अलग-अलग दैनिक, प्रसाद, श्रृंगार यजमान बने। 121 रुद्री पाठ के यजमान हुए। यह रुद्री पाठ इसलिए अद्वितीय रहा क्योंकि इसकी पूर्णाहुति सहस्रार्चन के रूप में हुई। द्वादश ज्योतिर्लिंग के यजमान हुए। यजमानों के द्वारा पूजन अर्चन के पश्चात कथा प्रेमियों ने दर्शन-पूजन का लाभ उठाया। पूजन-अर्चन की सारी विधियाँ ज्योतिष और वास्तु के प्रकांड विद्वान आचार्य श्री के पिता आचार्य विष्णुकांत शास्त्री द्वारा संपन्न हुई।

★ आचार्य श्री ने व्यास पीठ से बार बार आह्वान किया कि छात्रावास निर्माण हेतु श्रोतागण मुक्त हस्त से दान करें। इस कथा से सिर्फ एक छात्रावास नहीं बल्कि दो चार छात्रावास तैयार हों। उनका आह्वान

सफल हुआ। भक्तगणों ने मुक्तहस्त से कल्याण आश्रम को सहयोग दिया।

★ पूरी कथा में सितार, वीणा, हारमोनियम का अद्भुत समागम बना। अलीपुर समिति की बहनों ने सायंकाल होने वाली आरती के लिए प्रतिदिन मनमोहक थालियाँ सजाईं। जो जहाँ था, वहीं से अपनी भूमिका निभा रहा था। हम कह सकते हैं कि यह सिर्फ कथा नहीं बल्कि कथा कुम्भ बन गई। महराज श्री के द्वारा सुनाई गई द्वादश ज्योतिर्लिंग की कथा अपने आप में अनूठी थी। अनेक वयोवृद्ध श्रोताओं के मुख से सुना गया कि द्वादश ज्योतिर्लिंग के प्राकट्य की सटीक जानकारी आज ही प्राप्त हुई।

★ महानगर के विभिन्न प्रतिष्ठित अखबारों ने आचार्य श्री कथा को अलग-अलग सारगर्भित शीर्षकों के साथ छापा।

★ कथा स्थल पर मंच के बायीं ओर लगी वनवासी समाज के नायकों की वीर गाथाओं का बखान करने वाली प्रदर्शनी ने दर्शकों में विशेष उत्साह का संचार किया। जनजातीय समाज में शक्ति व सामर्थ्य विलक्षण है। इस प्रदर्शनी में बिरसा मुंडा, सिद्धू कान्हू, जतरा भगत, तिलका मांझी, अल्लूरी सीताराम राजू, भीमा नायक, शंभूधन फूंगलोसा, नाग्या कातकारी, सिनगी दई-कैली दई, रानी माँ गाईदिन्ल्यू, जादो नांग, तांत्या भील आदि जनजातीय वीर वीरांगनाओं की जीवन गाथा का दिग्दर्शन कराया गया। इन प्रेरणा पुरुषों के जीवन वृत्त को समाज के सम्मुख व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया जिससे कृतज्ञता के भावों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ समाज में प्रेरणा के स्वर मुखर हो और दायित्व बोध की चेतना का जागरण हो सके। सभी दर्शकों ने इस प्रदर्शनी की मुक्त कंठ से सराहना की।

★ इस सप्त दिवसीय कथा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख माननीय अद्वैतचरण दत्त, अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य माननीय सुनील पद गोस्वामी, दक्षिण बंङ्ग प्रांत प्रचारक माननीय प्रशांत भट्ट सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से कथा की श्री वृद्धि की। वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय एवं प्रांतीय अधिकारियों ने भी शिव पुराण कथा का भरपूर आनंद लिया। अखिल भारतीय प्रशिक्षण टोली के सदस्य श्री कृपा प्रसाद सिंह तो सातों दिन कथा में उपस्थित रहे। अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख आदरणीय भगवान सहाय जी, अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष श्री शंकर अग्रवाल, अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख डॉ. विश्वामित्र, अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री अतुल जोग, दक्षिण बंग प्रांत अध्यक्ष डॉ. चुनाराम मुर्मू, अखिल भारतीय महिला प्रमुख सुश्री वीणापाणी दास शर्मा एवं अन्य अनेक अधिकारियों ने शोभा मंडित किया। कोलकाता महानगर के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक क्षेत्र की अनेक विशिष्ट विभूतियों ने अपनी उपस्थिति से कथा आयोजन को गरिमा प्रदान की। कल्याण आश्रम ने भी सभी वरिष्ठ विभूतियों का राम हनुमान की गले मिली छवि देकर एवं अंग वस्त्र प्रदान कर अभिनंदन किया।

कथा के सुचारू संचालन हेतु विभिन्न विभागों की संरचना की गई यथा प्रचार प्रसार, संत व्यवस्था, पूजन व्यवस्था, रुद्री पाठ, बैठाने की व्यवस्था, अल्पाहार व्यवस्था आदि। अलग-अलग समितियां बनाकर कार्यकर्ताओं को अलग-अलग विभाग के दायित्व दिए गए थे। सभी कार्यकर्ताओं नेअपने दायित्व का बखूबी निर्वाह किया। विश्वास है कि यह कथा हम सबके जीवन में प्रसन्नता और आह्लाद की तो सृष्टि करेगी ही सामाजिक समरसता के हमारे लक्ष्य को हासिल करने में भी मील का पत्थर बनेगी। ■

शिव महापुराण कथा का सार संदेश

- तारा माहेश्वरी, कार्यकर्ता, गोवाबागान समिति

परम पूज्य मृदुलकान्त शास्त्री जी के श्रीमुख से व्याख्यायित होकर श्री शिवपुराण कथा कोलकाता-हावड़ा महानगरवासियों के लिये बहुत ही प्रेरक और प्रासंगिक हो गयी है। आइये सप्त दिवसीय कथा का सार जानें और समझें -

प्रथम दिन की कथा

शिवमहापुराण की प्रथम दिन की कथा में आचार्य श्री ने कहा कि शिवमहापुराण की कथा अनंत कल्याणकारी है। कथा में शिवलिंग प्राकाट्य उत्सव था। श्रावण मास का आभूषण है शिव कथा। इसके श्रवण मात्र से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इस कथा के श्रवण से दैहिक, दैविक और भौतिक सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। आपने कहा कि शिवमहापुराण कथा के श्रोता जहाँ जहाँ से गुजरते हैं वह स्थान भी शिवकथा से अभिषिक्त हो उठता है। शिवकथा के श्रोता पर शिवकृपा की मंगलवर्षा तो अनिर्वचनीय है। देवराज का प्रसंग सुनाते हुए आचार्य श्री ने कहा कि हम जब चाहते हैं और जितना चाहते हैं वो भगवान से हमें नहीं मिलता। भगवान प्राणी मात्र के लिए लिए कब और कितना हितकारी है, कल्याणकारी है यह देखते हुए देते हैं। शिव महापुराण की कथा अनन्त कल्याणकारी है। इसके श्रवण मात्र से दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों का सहज ही शमन हो जाता है।

द्वितीय दिन की कथा

द्वितीय दिन की कथा के अनिर्वचनीय आनंद में सभी आकंठ डूबे रहे। आचार्य श्री की रसमयी वाणी में सभी ने जाना कि पहला शिवलिंग अरुणाचल प्रदेश(तमिलनाडु) में प्रकट हुआ। नारद मोह, कुबेर चरित्र और सती जन्म की कथा को सुनाते हुए स्वनामधन्य महराज श्री ने अपनी मृदुल वाणी में कहा कि हमारे लिए सनातन धर्म का अनुसरण पिछड़ेपन का संकेत हो सकता है लेकिन विदेशियों के लिए यह जीवन का तत्व है, जीने का सार है। इसलिए वो चोटी रखकर, नंगे पैर, धोती पहन रहे हैं, कुर्ता पहन रहे हैं, पूरा तिलक लगा रहे हैं जबकि हमें चंदन और तिलक लगाने में संकोच होता है, शिखा रखने को हम तैयार नहीं, जनेऊ धारण करने को हम तैयार नहीं, भजन करने को तैयार नहीं

जबकि विदेशी लोग एक एक लाख भगवन्नाम रोज जप रहे हैं।' महाराजश्री ने कहा कि स्कंद पुराण में अरुणाचल की विशेष महिमा बतायी गयी है जहाँ पर सबसे पहला शिवलिंग प्रकट हुआ। स्वयं भगवान शिव ने कहा है कि जो यहाँ पर निवास करेगा और देह छोड़ेगा उसे सीधे शिवलोक की प्राप्ति होगी । यहीं पर उत्सव आदि होने चाहिए लेकिन यहाँ पर विदेशी ज्यादा आते हैं भारतीय कम जाते हैं जबकि शास्त्रों में वर्णित है कि स्वयं भगवान शिव ने कहा है कि यहाँ पर जप-तप-दान-हवन करने का करोड़ गुना फल होगा। महाराज श्री ने कहा कि भगवान शंकर ने प्राकृतिक स्थान को अपने सभी तीर्थों में श्रेष्ठ बताते हुए यहाँ तक कहा है कि यहाँ आकर मनुष्य केवल मेरे नाम का जाप करे तो ही अनंत फलदायी है। उन्होंने शिव महापुराण के अन्य विविध प्रसंगों पर मर्मस्पर्शी मार्गदर्शन के साथ ही शिव स्तुतियों से श्रद्धालुओं को शिव भक्ति में डुबो दिया।

कथा का तृतीय दिन

पार्वती जन्म के साथ-साथ श्री शिव महापुराण कथा में शिव पार्वती विवाह की धूम रही। कथा में महाराज जी के कथन का मुख्य सार था कि जन्म से नहीं यश तो कर्मों से अर्जित होता है। पार्वती जी के जन्म की कथा सुनाते हुए कहा कि पार्वती जी का प्राकट्य

राम नवमी के दिन ही हुआ था। शास्त्रों में वर्णित है कि चैत्र मास की नवरात्रि की नवमी तिथि को दोपहर में 12 बजे भगवान राम प्रकट हुए हैं जबकि मध्य रात्रि को 12 बजे पार्वती जी का जन्म हुआ है। महाराजश्री ने कहा कि हिमालय और मैना के 100 पुत्रों के जन्म पर जो आनंद उल्लास नहीं हुआ वो एक कन्या पार्वती के प्राकट्य पर हुआ। इसलिए कन्या के होने पर भरपूर खुशियाँ मनाइए। यह मत सोचिए कि मेरा वंश चलेगा कि नहीं चलेगा क्योंकि चार पीढ़ी बाद तो स्वभाविक रूप से व्यक्ति का नाम भी विस्मृत हो जाता है। आज के समय संदर्भ पर बोलते हुए महाराजश्री ने कहा कि दुनिया मे आँसू पोंछने वाले कम मिलेंगे निकालने वाले ज्यादा और पराये की छोड़ो, अपना भी आँसू निकालने को ही तैयार बैठा है। पार्वती प्राकट्य की कथा के दौरान महाराजश्री ने अपने सुरीले कंठ से 'हिमगिरि के बजत बधाई, मैना ने लाली जाई....' भजन सुनाकर श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया।

चतुर्थ दिवस

इस दिन की कथा का मुख्य सार था विवाह में प्रदर्शन बन्द कर बेटियों का भविष्य सुरक्षित करें। 'हर माता-पिता चाहते हैं कि उनकी बिटिया सुखी रहे। वे कर्जा ले लेकर, खुद को मिटा मिटाकर अपनी बिटिया का विवाह करते हैं, फिर भी उनकी

एक ही चिंता रहती है कि उनकी बिटिया सुखी रहे क्यूंकि आज भी अनेक बेटियों को दहेज के कारण मार दिया जाता है, ऐसा हमारी जानकारी में आए दिन आता है । इसके लिए यह जरूरी है कि आप भले ही कम पैसे वालों के घर में अपनी बेटी का रिश्ता करो लेकिन इस बात के प्रति सुनिश्चित हो जाओ कि आपकी बेटी जिस घर जाएगी वहाँ वह सुखी और सुरक्षित रहेगी लेकिन हम कर उल्टा ही रहे हैं कि हम अपने से ऊँचा घर देख रहे हैं जिसका परिणाम हमारी बेटियों के लिए दुखदायी हो रहा है। महाराजश्री ने कहा कि अगर बहुओं से माता-पिता के समान आदर पाना है तो इसके लिए स्वयं भी वैसा बनना होगा। शिव पुराण कथा के चौथे दिन महाराज श्री ने कहा समाज को एकजुट करने के लिए शिव भगवान के पूजन के विस्तार की आवश्यकता है। पशुपति नाथ वनयोगी ही है। शिव जी मात्र दूध, दही, जल एवं बेलपत्र से खुश हो जाते हैं। उनकी

पूजा का अधिकार चारो वर्णों सहित स्त्रियों को भी समान है। कथा में बेलपत्र रुद्राक्ष आदि की महिमा वर्णित करते हुए आपने बताया बेलपत्र के तीन पत्ते सत्, रज और तम तीन गुणों के प्रतीक हैं। ये शिव के तीन नेत्रों एवं त्रिशूल का स्वरूप हैं।

पंचम दिवस

पंचम दिवस की कथा का मुख्य सार था धार्मिक धारावाहिकों की आड़ में धर्मानुरागी बंधु भी हिन्दू देवी-देवताओं को निर्बल बता रहे हैं।

आज की कथा में मुख्य आकर्षण शिव-पार्वती के पुत्र श्री कार्तिकेय जी और गणपति जी का जन्मोत्सव था। पंचम दिवस की कथा में महाराज श्री का मुख्य उद्‌बोधन था कि आजकल जो नयी फ़िल्में आ रही हैं उन्हें देखकर यह सोचना कि केवल विधर्मी ही हमारे धर्म का उपहास उड़ा रहे हैं, हमारे भगवान को निर्बल बता रहे हैं, पूर्णत:

सही नहीं है। धार्मिक धारावाहिकों की आड़ में श्रद्धालु हिंदू भी, सनातनी भी अपने आराध्य को निर्बल ही बताना चाहते हैं। यह बड़ा कुचक्र है।' जलंधर वध के प्रसंग पर महाराजश्री ने कहा कि टी.वी. पर आपने धारावाहिक देखे होंगे, उसमे जलंधर को इतना बड़ा असुर बता दिया गया कि भगवान शंकर उसको बड़ी कठिनाई से मार पाए। काल्पनिक धारावाहिक या फ़िल्में हों तो ठीक है लेकिन जिनमें ऐतिहासिक और पौराणिक पात्रों को जोड़ दिया जाता है, देवी देवताओं को जोड़ दिया जाता है तो प्रस्तुतीकरण सच्चाई का ही होना चाहिए, उसमें कल्पना का कोई काम नहीं। शिव पुराण में स्पष्ट है कि जलंधर को मारने में भगवान शिव को कोई समस्या नहीं हुई। लेकिन विगत दिनों प्रसारित एक धारावाहिक में जलंधर को भगवान शिव से भी अधिक शक्तिशाली दिखाया गया। शास्त्री जी ने कहा कि ऐसे धारावाहिकों को देखकर हमारे बच्चों के दिमाग में बैठ रहा है कि हमारे देवताओं से असुर अधिक शक्तिशाली हैं। महाराजश्री ने विविध प्रसंगों पर भी सारगर्भित मार्गदर्शन देते हुए महामृत्युंजय मंत्र की महिमा बताई और कहा कि यह वैदिक मंत्र है, इसमें संगीत का प्रयोग नहीं होता। जो लोग घर की डोर बेल या फोन की रिंग टोन में यह मंत्र लगाकर सोच रहे हैं कि उन्हें लाभ मिल रहा है तो यह बिल्कुल गलत है क्योंकि इससे इस मंत्र का असम्मान होता है।

षष्ठ दिवस

कथा का षष्ठ दिवस और कथा सार का मुख्य बिंदु था मानव देह सफल होगी ठाकुरजी के चरणों को पकड़ने से। आज की कथा का मुख्य आकर्षण था श्री नंदीश्वर चरित्र और द्वादश ज्योतिर्लिंग महोत्सव।

आचार्य श्री ने द्वादश ज्योतिर्लिंग कथा के माध्यम से भक्तों में व्याप्त अनेक भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास किया। द्वादश ज्योतिर्लिंग कथा का माहात्म्य तो ऐसा बना कि प्रत्येक श्रोता यही कहते रहे कि द्वादश ज्योतिर्लिंग की प्राकाट्य कथा सुनकर जीवन सफल हो गया।

आचार्य श्री ने आगे कहा कि **"जीवन में मत पाप कमा, कुछ पुण्य कमा करके धर जा । मन**

चंचल है विषयांचल में, न लपेट इससे कुछ तो डर जा।" यह दुर्लभ देह मिली ना मिली, शुभ कर्म यही जग में कर जा। गिरिजापति के पद पंकज में गिर जा गिर जा। गिरिजापति के चरणों में अगर हम गिर जाएँ तो न किसी मंत्र की आवश्यकता है, न किसी पूजन की आवश्यकता है और न किसी तपस्या की। मानव देह सफल होगी ठाकुर जी के चरणों को पकड़ने से। कथा का फल भी शरणागति है, जप-तप-पूजन सबका फल ठाकुरजी के चरणों की शरणागति है। आचार्य श्री ने कहा कि कृष्ण ही शिव है, जो शिव है वही नारायण है, वही राम है, वही ब्रह्मा है। भगवान में कोई भेद मत मानिये, सब एक ही रूप हैं।

सप्तम दिवस

सप्तम दिवस कथा विश्राम के दिन आचार्य श्री ने जीवन के बहुत ही महत्वपूर्ण सूत्र बताए। श्री देवी चरित्र और श्री हनुमान चरित्र के माध्यम से आचार्य श्री ने कहा कि सेवा से बड़ा धर्म नहीं है। अगर अब भी हमने अपने जीवन में परिवर्तन नहीं किया तो कब करेंगे। निरहंकारी रहना, हनुमान जी से सीखिए। यह सबसे बड़ा गुण है। हनुमानजी में विद्या बहुत है, बल बहुत है, ज्ञान के सागर हैं। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी हनुमान जी सदैव अपने प्रभु के चरणों में बैठे मिलेंगे, हमेशा हाथ जोड़े मिलेंगे। बड़ा होने पर भी छोटा बनकर रहना बड़ा कठिन है और यही गुण कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं में देखने को मिलता है। सब एक दूसरे को आगे बढ़ाते हैं। महाराज श्री ने कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं की अनुशासित सेवा-भावना की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि सेवा और धर्म में कोई भेद नहीं है। आप धर्म की रक्षा के लिए ही तो सेवा कर रहे हैं। श्रवण तो पहली भक्ति है लेकिन सेवा नौवीं भक्ति है। यह सबसे ऊंची सीढ़ी है क्यूंकि सेवा से बड़ा कोई धर्म है ही नहीं। शास्त्री जी ने कहा कि जो कार्यकर्ता क्षेत्र में हैं उनकी सहायता अगर हमलोग नहीं करेंगे तो वे लोग टूट जायेंगे, बिखर जायेंगे। वनवासियों को जोड़ने का कार्य तो वो कर रहे हैं, हमें तो उनके कार्य में भावनात्मक सहयोग करना है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा पुरूलिया में छात्रावास के लिए आयोजित इस कथा के सन्दर्भ में शास्त्री जी ने अनुरोध किया कि हम सभी इतनी उदारता के साथ सहयोग करें कि एक छात्रावास की परिकल्पना ही इससे साकार ना हो बल्कि दो-चार छात्रावासों का निर्माण हो जाए और इस कथा का महत् उद्देश्य पूरा हो जाए। ■

शिवपुराण कथा के पूर्व स्नेह मिलन का आयोजन

कथा श्रवण से संस्कार निर्माण होता है: भगवान सहाय

- महेश मोदी, क्षेत्रीय नगर प्रमुख

"कथा से संस्कार होता है। संस्कार से समाज बनता है और समाज से मानवता पुष्पित और पल्लिवत होती है।" शिव महापुराण कथा के सफल आयोजन के लिए कार्यकर्ताओं के स्नेह मिलन कार्यक्रम में ये विचार व्यक्त किए अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख माननीय भगवान सहाय जी ने।

पुरुलिया में कॉलेज छात्रों हेतु छात्रावास निर्माण हेतु एवं सेवाकार्यों के विस्तार के लिए परम पुनीत पुरुषोत्तम मास में पूर्वांचल कोलकाता हावड़ा महनगर द्वारा संकल्पित शिवमहापुराण कथा की सुरभि चारों दिशाओं में फैले। कल्याण आश्रम अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करे, इसको विचार कर राष्ट्रकार्य में संलग्न कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन हेतु दिनांक 2 जुलाई को बालीगंज बैंक्वेट में स्नेह मिलन कार्यक्रम हुआ। इस मिलन समारोह में शिवपुराण कथा की व्यवस्था से जुड़े लगभग 150 कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

समारोह में कल्याण भारती की सह-संपादिका डॉ रंजना त्रिपाठी ने वनवासी बलिदानियों पर केन्द्रित पुस्तक **"वनवासी गौरव"** का विमोचन माननीय भगवान सहाय जी के करकमलों से करवाया। इस पुस्तक के लेखक द्वय हैं श्री सच्चिदानन्द जोशी और श्री सत्येन्द्र सिंह। समारोह में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए माननीय भगवान सहाय जी ने कहा कि कथा का दान सर्वश्रेष्ठ है, तो क्यों सर्वश्रेष्ठ है? क्योंकि कथा से संस्कार होता है। संस्कार से समाज बनता है और समाज से मानवता पुष्पित और पल्लवित होती है और ये जो मनुष्यता है व्यक्ति को राष्ट्र के साथ जोड़कर देश को समुन्नत करती है। कोई भी राष्ट्र तभी सुखमय और सम्मानपूर्वक जीता है जब राष्ट्र में रहने वाले समाज एकरस रहते हैं समरस होते हैं। इस समरसता और एकरसता के लिए वनवासी कल्याण आश्रम वनवासी और नगरवासी के बीच एक सेतुबंध का कार्य करता है। 'तू मैं एक रक्त' इस ध्येय वाक्य से कार्य करता है और साथ में इसी भाव को सबके बीच स्थापित करने का प्रयास करता है कि 'हम ग्राम एवं नगरवासी सब भारतवासी।' हम सब जानते हैं कि सारे ज्ञान-विज्ञान का केंद्र ये वन हैं। रामायण में अरण्यकांड है, महाभारत में आरण्यक संहिता है। वानप्रस्थ और संन्यास जैसी श्रेष्ठ परंपराएँ अपने समाज में रही हैं। भगवान राम ने जब वन के लिए प्रस्थान किया तो सबसे पहले भरद्वाज मुनि के आश्रम में रुके। विश्राम के पश्चात् चित्रकूट पहुँचे। जब भरत ननिहाल से

अयोध्या पहुँचते हैं तब उन्हें पिता के देहावसान तथा सीता जी, लक्ष्मण जी सहित श्रीराम के वन गमन की सूचना मिलती है तब अपने भाई राम को पुन: अयोध्या लाने के लिए चित्रकूट पहुँचते हैं। चित्रकूट गमन में भरत जी के साथ महर्षि वशिष्ठ थे। उनके सान्निध्य में नौ हज़ार हाथी, साठ हज़ार घुड़सवार, अनेकानेक रथ और एक लाख सैनिक राम जी को लाने के लिए भरत जी के साथ चलते हैं। उनका भी पहला पड़ाव ऋषि भरद्वाज का आश्रम में ही होता है। हम आप सिर्फ कल्पना कर सकते हैं कि उस समय के संन्यासियों के आश्रम कितने विशाल और बड़े होते थे। उनकी समाज में क्या प्रतिष्ठा होती थी। आश्रम के संचालन में और भगवान राम के वनवासी जीवनकाल में जिन्होंने साथ निभाया, ऐसे वनवासी समाज के बीच कार्य करते हुए उस समाज को एकता के सूत्र में जोड़कर भारत को एकजुट करने का कार्य वनवासी कल्याण आश्रम कर रहा है। 26 दिसम्बर 1952 को यह कार्य प्रारम्भ हुआ और सर्वप्रथम छात्रावास के माध्यम से ही कार्य आरंभ हुआ, अत: कल्याण आश्रम के कार्य में छात्रावास का बहुत बड़ा महत्त्व है। छात्रावास व्यक्ति निर्माण का केंद्र है। व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र-निर्माण होता है। सामाजिक जीवन में चरित्रवान निष्ठावान नागरिक का महत्त्व है, ऐसे नागरिकों का उत्थान छात्रावासों के माध्यम से वनवासी क्षेत्रों में कल्याण आश्रम कर रहा है।

कल्याण आश्रम के अनेकों प्रकार के आयाम हैं। छात्रावास से शुरू होकर आज यह एक वट-वृक्ष जैसा तैयार हो चुका है। संपूर्ण भारत के अंदर 33% जनजाति समाज रह रहा है। हमारा देश आठ अंतर्राष्ट्रीय देशों की सीमाओं से घिरा है। उन अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के नजदीक 38% भूभाग ऐसा है, जिस पर वनवासी समाज रहता है। 705 प्रकार की जनजातियाँ हैं। उन 705 प्रकार की जनजातियों में से लगभग 500 से अधिक जनजातियों से कल्याण आश्रम का सीधा संपर्क है। कुल 105300 वनवासी गाँव हैं, इनमें से लगभग 51000 से अधिक गाँवों

में वनवासी कल्याण आश्रम का सीधा संपर्क है। 30000 गाँवों में लगभग 22000 सेवा के प्रकल्प चल रहे हैं। और इन सब कार्यों को करने के लिए लगभग 1200 ऐसे पूर्णकालीन कार्यकर्ता हैं, जिनके अपने जीवन का ध्येय है- 'मोटा खाएँगें मोटा पहनेंगे' लेकिन भारत माता की सेवा करेंगे। इस प्रकार के संकल्प को लेकर जीवनव्रती कार्यकर्ता आज हर क्षेत्र में कार्य करते हुए दिखाई देते हैं, जो बीज रूप में कार्य चला था, उसका आज ऐसा विशाल स्वरूप दिखाई देता है। वनवासी कल्याण आश्रम वनवासी समाज के लिए काम करता है। वनवासी समाज के गौरवशाली अतीत को जागृत करते हुए स्वाभिमान के साथ स्वावलंबन की ओर अग्रसर है। माननीय भगवान दास जी ने आजादी के लिए अपना बलिदान करने वाले वनवासी वीरों को भी याद किया। देश की आज़ादी की लड़ाई में जनजाति समाज ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। हमारे समाज में जानकरी हो इसके लिए कल्याण आश्रम ने पूरे भारत के बलिदानी वनवासी समाज के वीरों के चित्र संकलन करके उन महापुरुषों की जीवनी को लिपिबद्ध किया है, और शौर्य गाथा को समाज तक पहुँचाने का अथक प्रयास किया है। 1857 से 85 वर्ष पूर्व

आज़ादी के लिए फाँसी का फंदा चूमने वाला तिलका मांझी ही था, ऐसी अनेक घटनाएँ हैं। लेकिन इतिहास 1857 से पढ़ाया जाता है। यह सामाज फिर से स्वावलंबी बने, यह समाज भारत की विकास यात्रा में फिर से अपना योगदान दे सके, इस प्रकार के पुनर्जागरण के लिए वनवासी कल्याण आश्रम कार्य कर रहा है। भारत का ऐसा कोई भूभाग नहीं है जहाँ वनवासी समाज हो और कल्याण आश्रम न हो। शिक्षा के क्षेत्र में 4700 विद्यालय कार्य रत हैं। अनेक एकल विद्यालय हैं जहाँ वनवासी बालक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। 4700 विद्यालयों में 117000 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। 2019 में चंद्रयान 2 का प्रक्षेपण हुआ था, इस प्रक्षेपण के समय उसमें छः वैज्ञानिक थे। उन छः वैज्ञानिकों में एक वैज्ञानिक वनवासी कल्याण आश्रम के विद्यालय और छात्रावास में पढ़ा हुआ विद्यार्थी है। चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक प्रकार के कार्य चलते हैं। खेल-कूद के क्षेत्र में कार्य हो रहे हैं। आज तीरंदाज़ी के क्षेत्र में भारत को गौरव दिलाने का कार्य जिसने किया है वह छात्र वनवासी कल्याण आश्रम का छात्र है। सुंदरवन के वृत्तचित्र में दिखाए गए छात्रावास की चर्चा करते हुए आपने कहा कि कल्याण आश्रम छात्रावास में ध्येयनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों का निर्माण हो रहा है। 250 छात्रावास पूरे भारतवर्ष में हैं, इनमें से 45 छात्रावास बालिकाओं के लिये हैं। कल्याण आश्रम के छात्रावास में पले-बढ़े विद्यार्थियों ने लोगों के मन को भी जीता है। भटक गए साथियों को वापस मुख्यधारा में लाने का कार्य हो रहा है। आपने इस कथन की पुष्टि के लिए अनेक जीवंत उदाहरण भी दिए। आपने कार्यकर्ताओं के योगदान को भी याद किया। ■

व्यक्ति का जीवन सफल ही नहीं सार्थक भी होना चाहिये: अतुल जोग

- संदीप चौधरी, कोलकाता-हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख

दिनांक 25 जून 2023 को बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकलय द्वारा आयोजित 37वाँ विवेकानंद सेवा सम्मान उत्तर पूर्व भारत के कार्बी आंगलांग जिले की समर्पित सेवाभावी सामाजिक संस्था **'लखीमन संघ'** को प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप 1 लाख रुपये की राशि एवं मानपत्र दिया गया। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम आनंद बोस जी ने समारोह की अध्यक्षता की।

प्रधान वक्ता के रूप में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संगठन मंत्री, माननीय अतुल रामचंद्र जोग जी ने सरल शब्दों में विवेकानंद के सपनों को सच करने का रास्ता बताते हुए कहा कि रोटी, कपड़ा और मकान तो हार्डवेयर है किन्तु हमें सॉफ्टवेयर यानि नैतिकता, सच्चरित्रता, सेवा, सहायता एवं ईमानदारी आदि पर भी ध्यान देना चाहिए, तभी हम देश की सच्ची सेवा कर पायेंगे। व्यक्ति का जीवन केवल सफल ही नहीं, सार्थक भी होना चाहिए। वनवासियों के बारे में जानना है तो उनके पास जाना होगा। लखीमन संघ द्वारा 120 मंदिरों एवं विद्यालय के माध्यम से अपनी संस्कृति के संरक्षण हेतु किये जा रहे प्रयासों की आपने सराहना की। भारत के जनजाति समाज की चर्चा करते हुए कार्बी समाज के बारे में बताया कि कार्बी समाज सभ्य समाज है।ये बाली के वंशज हैं।धर्मान्तरण के खतरे को भाँपते हुए इनके गुरू ने लगभग 130 गाँवों में मंदिर बनवाए। धर्म सभाओं का आयोजन प्रारंभ किया। इस धर्म सभा में 70 से 80 हजार लोग आते हैं। यह समाज धर्मसभा के अतिरिक्त विद्यालयों को भी संचालित करता है।

आपने अपने वक्तव्य में कहा कि वनवासी समाज की चर्चा हो तब बालासाहब देशपांडे को कैसे भुलाया जा सकता है? पूर्वोत्तर भारत के जनजाति समाज के बीच धर्मान्तरण के विरुद्ध शंखनाद करने वाले बालासाहब देशपांडे जी एक बार मेघालय गए थे, तब परिवारों में भोजन के लिए जाते थे। ऐसे ही एक दिन एक परिवार में गए, जहाँ आपका परिचय माईपासा नाम की बूढ़ी महिला से हुआ। वह अपने मूल निवास स्थान से 50 किलोमीटर दूर सिर्फ इसलिए चली आई थी ताकि वे ईसाई धर्मान्तरण से बच सकें एवं किसी हिन्दू मिशनरी के दर्शन का पुण्य लाभ ले सकें। माईपासा को यह विश्वास था कि इन ईसाई मिशनरियों का स्थान एक न एक दिन हिन्दू मिशनरी जरूर लेगी। माईपासा को बालासाहब देशपांडे में वह स्वरूप दिखाई दिया जो माता शबरी को भगवान राम में दिखाई दिया था।

अपने वक्तव्य में आपने माँ रानी गादिन्ल्यू को उनके देशसेवा कार्य और जनजातीय समाज को धर्मान्तरण से बचाने के लिए उनके समर्पण को भी याद किया। पुन:स्मरण कराया कि कुमार सभा पुस्तकालय ने अपना पहला विवेकानंद सम्मान माँ रानी गादिन्ल्यू को दिया था। आपने असम के बोडो संगठन को धर्मान्तरण के विरुद्ध काम करने के लिए भी याद किया। अपने सारगर्भित वक्तव्य को पूर्णता की ओर ले जाते हुए आपने कहा कि हमें सदैव परहित चिंतन करते हुए कर्मयोग की साधना करनी चाहिए। ■

तूफान और बारिश पर भारी पड़ी डीलिस्टिंग की हुंकार महारैली

उदयपुर में चहुंओर गूंजा - तिंग-तिंग
बेतिंग-डीलिस्टिंग-डीलिस्टिंग।।

जनजाति सुरक्षा मंच राजस्थान के आह्वान पर उदयपुर में हल्दीघाटी युद्ध विजय दिवस पर आयोजित हुंकार डीलिस्टिंग महारैली में जनजाति युवाओं का जोश लगातार हो रही बारिश भी नहीं थाम पाई। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से सूर्योदय से पूर्व अपने-अपने घरों से निकले जनजाति समाज के आबाल-वृद्ध, महिलाएँ-युवतियाँ दोपहर तक उदयपुर पहुँचे और महारैली का हिस्सा बनकर डीलिस्टिंग की हुंकार भरी।

शहर के पाँच स्थानों भीलूराणा चौराहा, सबसिटी सेंटर, निम्बार्क कॉलेज, महाकाल मंदिर, बीएन मैदान, फील्ड क्लब से निकली डीलिस्टिंग की रैलियाँ जब विभिन्न मार्गों से होते हुए सभा स्थल गांधी ग्राउण्ड की ओर बढ़ी तो ऐसा लगा मानो जनजाति संस्कृति का सैलाब मेवाड़ की धरा पर उमड़ पड़ा। डीलिस्टिंग की माँग की तख्तियाँ हाथों में लेकर नारे लगाते हुए जनजाति समाज के लोग सभा स्थल पहुँचे। सभा स्थल पर पहुँचने के साथ ही वहां स्थित मंच पर जनजाति युवाओं ने पारम्परिक प्रस्तुतियाँ देना शुरू कर दिया।

इससे पूर्व, कोटा-हाड़ौती क्षेत्र से जनजाति बंधु सूर्योदय से पूर्व ही हुंकार भरते हुए उदयपुर के लिए रवाना हो गए तो सूर्योदय के साथ ही अन्य जिलों से भी जनजाति बंधुओं के वाहनों ने गियर बदलना शुरू कर दिए। तेज हवा और लगातार रह-रह कर हो रही बारिश भी उनके कदम नहीं रोक सकी। कोटा से निकले जनजाति बंधुओं की टोली ने मार्ग में सांवरिया सेठ के दर्शन किए और वहीं पर सुबह

यजमानों द्वारा १२१ रुद्राभिषेक

स्वयं में शिवत्व की जागृति हेतु रुद्राभिषेक करते हैं;
शिवलिंग के अभिषेक से निज को ही पावन करते हैं।।

कथा स्थल पर सम्मानित विभूतियाँ

आठ दिनों की प्रभु-कथा में, कई भक्तगण आये थे;
विभूतियों को सम्मानित कर, सब के उर हर्षाये थे।।

समितियों द्वारा उद्बोधन गीत

नित्य नई समिति ने आकर, कायम रखी संस्था की रीत;
देश प्रेम के स्वर में पिरोया, शिव-कथा का उद्बोधन गीत।।

संगठन द्वारा संचालित गतिविधियाँ एवं प्रदर्शनी

समय-समय पर नई-नई नित, गतिविधियाँ सामने आईं हैं;
प्रभु-भक्ति से शक्ति पाकर, हर संस्था ऊर्जित रह पाई है।।

का भोजन किया। राजसमंद, सलूम्बर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ सहित विभिन्न क्षेत्रों से जनजाति बंधु मस्ती में पारम्परिक गीत गाते, नारे लगाते उदयपुर की ओर बढ़े। कई युवा पारम्परिक शस्त्रों सहित पारम्परिक वाद्य यंत्रों को भी सज्जित कर लाते हुए नजर आए।

इसी तरह, अलग-अलग मार्गों से आते हुए जनजाति बंधुओं ने मार्ग में अलग-अलग जगह ठहरकर सुबह का भोजन किया। इसके बाद वे अपने-अपने निर्धारित स्थलों पर पहुँचे।

घर-घर माताओं ने उत्साह से की भोजन व्यवस्था

उदयपुर में आने वाले जनजाति बंधु-बांधवों के लिए शहर की मातृशक्ति ने भी सुबह से भोजन पैकेट की तैयारी शुरू कर दी। दस बजे बाद उदयपुर शहर व समीपवर्ती गांवों में कार्यकर्ताओं ने भोजन पैकेट एकत्र करना शुरू कर दिया। जितना उत्साह जनजाति बंधुओं के उदयपुर आने में नजर आ रहा था, उतना ही उत्साह घर-घर में भोजन पैकेट बना रही मातृशक्ति में नजर आया। अड़ोस-पड़ोस में पूछ-पूछ कर खराब नहीं होने वाले व्यंजन बनाए गए। किसी-किसी ने तो आम की केरियाँ भी भोजन पैकेट में रख दीं। कहीं भोजन पैकेट एकत्र करने वाले कार्यकर्ता नहीं पहुँचे तो माताएँ स्वयं उन तक पहुँचती नजर आईं। 25-25 पैकेट का एक थैला बनाया गया। इनको अलग-अलग पंजीयन स्थल पर संख्या के अनुसार दोपहर बाद 3 बजे तक पहुँचा दिया गया। भोजन पैकेट के लिए शहरी क्षेत्र को 73 भागों में बाँटा गया तथा समीपवर्ती 113 गाँव भी भोजन पैकेट व्यवस्था में शामिल किए गए।

बारिश में भी सजाए चौराहे

-इस बीच, उदयपुर में हुंकार रैली के मद्देनजर विभिन्न संगठनों ने देर रात तक काम करते हुए चौराहों पर पताकाएँ, बैनर आदि लगाए। सुबह होते ही गांधी ग्राउण्ड और मार्गों की सजावट के लिए कार्यकर्ता जुटे, तो रंगोली सजाने के लिए बहनें पहुँचीं। लगातार हो रही बारिश के बीच भी कार्यकर्ताओं को उत्साह देखते ही बना।

भीलू राणा को नमन कर निकली शोभायात्राएँ

-पहली शोभायात्रा सबसिटी सेंटर से 3.30 बजे भीलू राणा पूंजा को नमन करने के साथ शुरू हुई। इसके बाद शेष चारों शोभायात्राएँ शुरू हुईं। सभी शोभायात्राएँ संतों के सान्निध्य में शुरू हुईं। संतों ने श्रीफल शगुन के साथ शोभायात्रा को शुरू किया। संत वृंद बग्घियों में बिराजकर रैली में चले। शोभायात्राओं में जनजाति बंधु पारम्परिक वाद्यों के साथ नाचते-गाते चलेंगे। करीब 5 बजे तक सभी शोभायात्राएं सभा स्थल तक पहुँचीं।

यहाँ-यहाँ से निकली शोभायात्राएँ

बांसवाड़ा, कुशलगढ़, सलूम्बर, सागवाड़ा से आने वालों की शोभायात्रा सबसिटी सेंटर भीलू राणा सर्कल से शुरू होकर आवरी माता, पुलिस लाइन, उदियापोल, अमृत नमकीन, बापू बाजार, देहलीगेट, अश्विनी बाजार, हाथीपोल, चेतक, पहाड़ी बस स्टैंड गेट नंबर 2 से गाँधी ग्राउण्ड में पहुँची।

-सिरोही, पाली, गोगुन्दा, राजसमंद व नाथद्वारा मार्ग से आने वाले बंधुओं की शोभायात्रा फील्ड क्लब से शुरू होकर सहेलियों की बाड़ी, यूआईटी पुलिया, लवकुश स्टेडियम गेट नंबर 3 से गाँधी ग्राउण्ड में पहुँची।

-खेरवाड़ा व डूंगरपुर से आने वालों की शोभायात्रा निम्बार्क कॉलेज से शुरू होकर सूरजपोल, टाउन हॉल रोड, देहलीगेट, कोर्ट चौराहा, चेतक, पहाड़ी बस स्टैंड गेट नंबर 2 से गाँधी ग्राउंड पहुँची।

-चित्तौड़-कोटा की ओर से आने वाले बंधुओं की शोभायात्रा बीएन ग्राउण्ड से शुरू होकर कुम्हारों का भट्टा, दुर्गा नर्सरी, शास्त्री सर्कल, कोर्ट चौराहा, चेतक, पहाड़ी बस स्टैंड गेट नंबर 2 से गाँधी ग्राउंड पहुँची।

-कोटड़ा, झाड़ोल, बाघपुरा की ओर से आने वाले बंधुओं की शोभायात्रा महाकाल से शुरू होकर आयुर्वेद कॉलेज, शिक्षा भवन होते हुए गुरु गोविन्द सिंह स्कूल वाले द्वार गेट नंबर 1 से गाँधी ग्राउंड पहुँची।

राजमार्गों पर जाम से आयोजक हुए परेशान

-चक्रवाती बारिश के चलते शनिवार शाम से ही चित्तौड़ व अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर जाम की स्थिति होने से रविवार दोपहर यहाँ पहुँची जनजाति समाज की गाड़ियाँ भी जाम में फँस गईं। जब काफी देर समाधान नहीं हुआ तो जनजाति सुरक्षा मंच ने जिला प्रशासन को आग्रह किया कि उदयपुर आ रही जनजाति बंधुओं की बसों को वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध कराया जाए। जनजाति सुरक्षा मंच के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने कहा कि चिंता तूफान के कारण आ रही बारिश से नहीं, जाम से है।

अनुशासन और प्रबंधन से शहर में नहीं लगा जाम

-इतनी बड़ी संख्या में उदयपुर शहर में आए जनजाति बंधुओं की रैलियाँ इतनी अनुशासित और समयबद्ध रही कि कहीं से भी शहर में जाम की समस्या सामने नहीं आई। दरअसल, गाड़ियों की पार्किंग का प्रबंधन व्यवस्थित होने और समय प्रबंधन भी समुचित होने से शहरवासी कहीं भी जाम में नहीं फँसे।

पाँच दिशाएँ, पाँच पंजीयन स्थल और पार्किंग व्यवस्थाएँ

-बांसवाड़ा, कुशलगढ़, सलूम्बर, सागवाड़ा से आने वालों की पंजीयन व्यवस्था सवीना पेट्रोल पम्प पर रही और इनके वाहनों की पार्किंग सबसिटी सेंटर एवं आसपास के 100 फीट रोड पर रखी गई।

-सिरोही, पाली, गोगुन्दा, राजसमंद व नाथद्वारा मार्ग से आने वाले बंधुओं के लिए सुखेर में पंजीयन व्यवस्था रखी गई और इनकी पार्किंग विद्या भवन स्कूल ग्राउण्ड में रखी गई।

-खेरवाड़ा व डूंगरपुर से आने वाले वाहनों की पंजीयन व्यवस्था हर्ष पैलेस होटल के समीप थी तथा पार्किंग फतेह स्कूल व माली कॉलोनी रोड पर रखी गई।

-चित्तौड़-प्रतापगढ़ तथा कोटा-बारां की ओर से आने वाले वाहनों की पंजीयन व्यवस्था देबारी फ्लाईओवर के नीचे रखी गई तथा चित्तौड़-प्रतापगढ़ के वाहनों की पार्किंग विद्या निकेतन सेक्टर-4 में तथा कोटा-बारां की पार्किंग बीएन ग्राउण्ड में रखी गई।

-कोटड़ा, झाड़ोल, बाघपुरा की ओर से आने वाले वाहनों की पंजीयन व्यवस्था सीसारमा पेट्रोल पम्प के पास रखी गई तथा पार्किंग रानी रोड, राजीव गांधी पार्क तक थी। ■

कविता .....

डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

सच जनजातियों ने जान लिया है।
डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

आगे बढ़ेंगे बढ़ते रहेंगे,
हम तो डीलिस्टिंग करके रहेंगे।
अपनी धरोहर को जान लिया है।।
डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

धोखा धर्म पर होने ना देंगे,
पहचान अपनी खोने ना देंगे।
एक- एक सगा जग ने मान लिया है।
डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

आंधी हमारी यह रूकने न देंगे,
पुरखों की शान को झुकने न देंगे।
हमने तो मिलकर एलान किया है।
डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

बदला जो जाति से झुक के रहेगा,
नाम आरक्षण से हटके रहेगा।
विरोधी ने ताकत को जान लिया है।
डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

यह ठान लिया है भैया ठान लिया है।
डीलिस्टिंग करेंगे यह ठान लिया है।

भील बालिका कालीबाई खाट का बलिदान

15 अगस्त 1947 से पूर्व भारत में अंग्रेजों का शासन था। उनकी शह पर अनेक राजे-रजवाड़े भी अपने क्षेत्र की जनता का दमन करते रहते थे। फिर भी स्वाधीनता की ललक सब ओर विद्यमान थी, जो समय-समय पर प्रकट भी होती रहती थी।

राजस्थान की एक रियासत डूंगरपुर के महारावल चाहते थे कि उनके राज्य में शिक्षा का प्रसार न हो। क्योंकि शिक्षित होकर व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाता था; लेकिन अनेक शिक्षक अपनी जान पर खेलकर विद्यालय चलाते थे। ऐसे ही एक अध्यापक थे सेंगाभाई, जो रास्तापाल गांव में पाठशाला चला रहे थे।

इस सारे क्षेत्र में महाराणा प्रताप के वीर अनुयायी भील बसते थे। विद्यालय के लिए नानाभाई खांट ने अपना भवन दिया था। इससे महारावल नाराज रहते थे। उन्होंने कई बार अपने सैनिक भेजकर नानाभाई और सेंगाभाई को विद्यालय बन्द करने के लिए कहा; पर स्वतंत्रता और शिक्षा के प्रेमी ये दोनों महापुरुष अपने विचारों पर दृढ.रहे।

यह घटना 19 जून, 1947 की है। डूंगरपुर का एक पुलिस अधिकारी कुछ जवानों के साथ रास्तापाल आ पहुँचा। उसने अंतिम बार नानाभाई और सेंगाभाई को चेतावनी दी, पर जब वे नहीं माने, तो उसने बेंत और बंदूक की बट से उनकी पिटाई शुरू कर दी। दोनों मार खाते रहे, पर विद्यालय बंद करने पर राजी नहीं हुए। नानाभाई का वृद्ध शरीर इतनी मार नहीं सह सका और उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। इतने पर भी पुलिस अधिकारी का क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने सेंगाभाई को अपने ट्रक के पीछे रस्सी से बाँध दिया।

उस समय वहाँ गाँव के भी अनेक लोग उपस्थित थे; पर डर के मारे किसी का बोलने का साहस नहीं हो रही था। उसी समय एक 12 वर्षीया भील बालिका कालीबाई वहाँ आ पहुँची। वह साहसी बालिका उसी विद्यालय में पढ़ती थी। उस समय वह जंगल से अपने पशुओं के लिए घास काट कर ला रही थी। उसके हाथ में तेज धार वाला हँसिया चमक रहा था। उसने जब नानाभाई और सेंगाभाई को इस दशा में देखा, तो वह रुक गयी।

उसने पुलिस अधिकारी से पूछा कि इन दोनों को किस कारण पकड़ा गया है। पुलिस अधिकारी पहले

तो चुप रहा; पर जब कालीबाई ने बार-बार पूछा, तो उसने बता दिया कि महारावल के आदेश के विरुद्ध विद्यालय चलाने के कारण उन्हें गिरफ्तार किया जा रहा है। कालीबाई ने कहा कि विद्यालय चलाना अपराध नहीं है। गोविन्द गुरुजी के आह्वान पर हर गाँव में विद्यालय खोले जा रहे हैं। वे कहते हैं कि शिक्षा ही हमारे विकास की कुंजी है।

पुलिस अधिकारी ने उसे इस प्रकार बोलते देख बौखला गया। उसने कहा कि विद्यालय चलाने वाले को गोली मार दी जाएगी। कालीबाई ने कहा, तो सबसे पहले मुझे गोली मारो। इस वार्तालाप से गाँव वाले भी उत्साहित होकर महारावल के विरुद्ध नारे लगाने लगे। इस पर पुलिस अधिकारी ने ट्रक चलाने का आदेश दिया। रस्सी से बँधे सेंगाभाई कराहते हुए घिसटने लगे। यह देखकर कालीबाई आवेश में आ गयी। उसने हँसिये के एक ही वार से रस्सी काट दी।

पुलिस अधिकारी के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और कालीबाई पर गोली चला दी। इस पर गाँव वालों ने पथराव शुरू कर दिया, जिससे डरकर पुलिस वाले भाग गये। इस प्रकार कालीबाई के बलिदान से सेंगाभाई के प्राण बच गये। इसके बाद पुलिस वालों का उस क्षेत्र में आने का साहस नहीं हुआ। कुछ ही दिन बाद देश स्वतंत्र हो गया। आज डूंगरपुर और सम्पूर्ण राजस्थान में शिक्षा की जो ज्योति जल रही है। उसमें कालीबाई और नानाभाई जैसे बलिदानियों का योगदान अविस्मरणीय है।

- वनवंधु से साभार ■

काकुड़गाछी महिला समिति द्वारा श्री विष्णुसहस्त्रनाम पाठ

ज्योति गुप्ता, संयोजिका, काकुड़गाछी महिला समिति

परम पावन पुरुषोत्तम मास में तरह-तरह के धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। पूर्वांचल कल्याण आश्रम की समितियों की ओर से भी इस तरह के सामाजिक और धार्मिक आयोजन करने की पवित्र परंपरा रही है। इसी कड़ी में काकुड़गाछी महिला समिति की ओर से श्री विष्णुसहस्त्रनाम पाठ का मंगल आयोजन दिनांक 3 अगस्त गुरुवार को अपराह्न 1 बजे कल्याण भवन, 29 वार्ड इंस्टीट्यूट, मानिकतल्ला में संपन्न हुआ। इस आयोजन में 80 महिलाएँ सम्मिलित हुई। ■

शबरी कन्या छात्रावास, रायपुर से बालिकाओं का कोलकाता आगमन

- मोहनलाल गर्ग, मंत्री, हावड़ा महानगर

आएँ जितनी भी बाधाएँ, तरुणाई को गाएँगें।
तुम झंझाएँ बुलवा लो, हम फिर भी दीप जलाएँगें।
मत छापो अखबारों में, हम दिल पर छप जाएँगें।
ऐसी छाप रहेगी मन पर, हमें भूल नहीं पाएँगे।।

ऐसी है अपने कार्यकर्तावृन्द की कार्यशैली, तभी तो अनेक झंझावातों को झेलकर अखिल भारतीय कल्याण आश्रम ने अपने गौरवशाली 71 वर्ष पूरे किए हैं। आइए साझा करते हैं ऐसा ही एक कथानक।

बात मई 2023 के प्रथम सप्ताह की है। छत्तीसगढ़ रायपुर शबरी छात्रावास से 19 बालिकाएँ और 3 बहनों को आज़ाद हिंद एक्सप्रेस से हावड़ा हो कर गुवाहटी जाना था। ट्रेन करीब 8 घण्टे लेट होने की वज़ह से वे लोग गुवाहटी नहीं जा सके। सही समय पर टिकट नहीं बन पाने के कारण बच्चियों को हावड़ा कार्यालय में रुकना पड़ा।

बस फिर क्या!!! हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं को तो मानो आतिथ्य के लिए माता शबरी मिल गईं। उन सभी को कोलकाता भ्रमण के लिए ले जाया गया। प्रथम दिन प्रात: अपने कार्यकर्ता दीपक जी अग्रवाल के यहाँ भोजन की व्यवस्था थी। बालिकायें बहुत आनंदित हुईं। दीपक जी ने स्मृति स्वरूप उपहार भी दिए। बाद में हावड़ा महिला समिति द्वारा बेलूर मठ दर्शन हेतु बालिकाओं को ले जाया गया। भोजन की व्यवस्था में हावड़ा जन आहार रेस्टोरेंट (संजय जी पोद्दार) ने नि:शुल्क सेवा प्रदान की। हावड़ा से गुवाहटी जाने के लिए टिकट की व्यवस्था में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयंसेवक की निष्ठा को कैसे भूला जा सकता है। बड़ी तत्परता से टिकट की व्यवस्था भी हो गई। इस कार्य में नूतन कार्यकर्ता मनोज जी धोकिया का अतुलनीय सहयोग स्मरणीय रहेगा।

हावड़ा कार्यालय में बालिकाओं की देखभाल में अपने आदरणीय शंकर लाल जी हाकिम का आत्मीय सहयोग प्राप्त हुआ। स्टेशन से कार्यालय आने की व्यवस्था में पुलिस प्रशासन का अविस्मरणीय योगदान रहा। शबरी छात्रावास की दीदी रोशनी देशमुख कोलकाता के कार्यकर्ताओं की आत्मीयता और आतिथ्य देखकर भावविह्वल हो उठीं। आँखें नम हो उठी।

कभी गर ठान लो मन में, समर्पित हो ही जाना है।
जगत कल्याण के हित में अर्पित हो ही जाना है।। ■

वनवासी कल्याण आश्रम से सुश्री गोलापी मझैन बनीं स्टार

- निर्मला केजरीवाल, मंत्री, महानगर महिला समिति

सुश्री गोलापी मझैन इन द्वीपों के सभी युवाओं के लिए एक आदर्श हैं, जो एक गरीब पारिवारिक पृष्ठभूमि से हैं, वनवासी कल्याण आश्रम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की छत्रछाया में आती हैं और अब चमक रही हैं।

डिगलीपुर की एक छोटी लड़की ने 10 साल की उम्र में वनवासी कल्याण आश्रम, मध्य अंडमान द्वारा संचालित रानी दुर्गावती गर्ल्स हॉस्टल बकुलतला में पांचवीं कक्षा में दाखिला लिया और अपनी स्कूली शिक्षा उक्त छात्रावास में रहकर पूरी की और वर्ष 2012 में सीनियर सेकेंडरी स्कूल बकुलतला सरकारी विद्यालय से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की। बाद में उन्होंने वनवासी कल्याण आश्रम, बकुलतला के पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में अथक परिश्रम किया। उनके प्रयासों से साबित होता है कि समाज और जरूरतमंदों के लिए काम करने में उम्र की कोई सीमा नहीं होती।

सुश्री गोलापी की खेल गतिविधियों में गहरी रुचि है और उन्होंने सॉफ्ट स्किल्स भी सीखी हैं। उन्होंने अपने स्कूल, विभिन्न खेल प्राधिकरणों और अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा समय-समय पर आयोजित कई खेल गतिविधियों में भाग लिया है और विभिन्न उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इंटरमीडिएट की पढ़ाई करने के बाद वह जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय (जेएनआरएम), पोर्ट ब्लेयर में बी.पीई (बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन) में शामिल हो गईं और 2017 में 80% अंकों के साथ स्नातक की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने महाराष्ट्र के अमरावती के श्री हनुमान व्यायाम प्रशिक्षण मंडल कॉलेज से वर्ष 2022 में 86% के साथ पोस्ट ग्रेजुएशन यानी एमपीएड (शारीरिक शिक्षा में मास्टर) पूरा किया है। अपने मास्टर डिग्री कोर्स के दौरान कोविड-19 की महामारी ने उनकी पढ़ाई को भी प्रभावित किया, उस अवधि में भी उन्होंने मास्क बनाकर और वितरित करके समाज के लिए काम किया और मुख्यालय के माध्यम से छोटा नागापुर क्षेत्र के आदिवासी बेल्ट में वंचित लोगों के लिए अन्य आवश्यक सहायता का समर्थन किया। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम, जशपुर, छत्तीसगढ़ ने उनकी पढ़ाई, समाज की सेवा और एक वंचित प्राणी के रूप में किए गए सभी प्रयासों को देखकर उनके पालन-पोषण का भार उठाया है।

उनकी उत्कृष्ट शैक्षणिक पृष्ठभूमि और समाज के प्रति उनकी सेवा उन्हें युवाओं के लिए एक आदर्श बनाती है। इसके अलावा, मध्य अंडमान के रंगत स्थित विवेकानन्द केंद्र विद्यालय (वीकेवी) में शारीरिक शिक्षा शिक्षक (पीईटी) के रूप में उनके चयन से रांची वनवासी समुदाय को उम्मीद है कि सामाजिक बदलाव के प्रयासों में योगदान देंगी। ■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम के छात्रावासों से शिक्षित 3 छात्रों का अभिनंदन

- आरती जायसवाल, संयोजिका, मानिकतल्ला समिति

शिव पुराण कथा के छठे दिन पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा संचालित छात्रावासों से शिक्षा प्राप्त तीन जनजातीय महानुभाव -श्री चुनाराम मुर्मू, अनल कुमार किस्कू और श्रीपति टूडू को सम्मानित करने का संगठन ने सौभाग्य प्राप्त किया। यह तीनों ही महानुभाव अपने-अपने क्षेत्रों में विकास की नई इबारत लिख रहे हैं। तीनों ने ही इस बात को प्रमाणित किया है कि

प्रतिभा जब अवसर पाए
आकाश को छू सकती है
मेहनत और लगन के बल पर
आशा पूरी हो सकती है।

डॉक्टर चुनाराम मुर्मू वर्तमान में पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग के अध्यक्ष का दायित्व निर्वहन

कर रहे हैं। आपने बेलपहाड़ी छात्रावास से दसवीं तक शिक्षा प्राप्त कर कोलकाता नेशनल मेडिकल कॉलेज से MBBS की डिग्री प्राप्त की और वर्तमान में पुरुलिया के रघुनाथपुर Super Speciality Hospital में मेडिसीन विभाग में यशस्वी चिकित्सक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

श्री अनिल कुमार किस्कू बांधवान छात्रवास से दसवीं तक की विद्यालयीन शिक्षा पूरी कर 2022 में सिद्धू कान्हू बिरसा विश्वविद्यालय से टॉपर हुए और देव

भाषा संस्कृत में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए स्वर्ण पदक से नवाजे गए।

श्री श्रीपति टुडू ने रावतोड़ा छात्रावास से दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की तथा वर्तमान में सिद्धू कान्हू बिरसा विश्वविद्यालय पुरुलिया के सहायक प्रोफेसर हैं। आपका परिचय सिर्फ इतना ही नहीं कि आप संथाली में M.A. है और आपकी पीएचडी पूरी होने वाली हैं। आप राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संथाली भाषा और संस्कृति पर अनेक सेमिनार आयोजित

कर चुके हैं और संथाली भाषा के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। 17 जुलाई से 21 जुलाई 2023 तक स्पेन में आयोजित चतुर्थ cultural exchange program में भी आप ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में 55 देशों के 67 लोगों ने भाग लिया था। आपका सबसे महत्वपूर्ण योगदान है भारतीय संविधान का संथाली भाषा में अनुवाद करना। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 29 मई 2023 को अपने मन की बात के 89 में सत्र में भारत के संविधान का संथाली भाषा में अनुवाद का उल्लेख कर आपके कार्य को समुचित मान्यता दी। आपने 26 अप्रैल 2023 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में मन की बात के सौवें एपिसोड में भी भाग लिया। 30 अप्रैल 2030 को भारत के संविधान का संथाली भाषा में अनुवाद के लिए आपको पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल डॉक्टर सी. वी. बोस आनंद द्वारा सम्मानित किया गया। अभावों और विषमता की आग में तप कर आगे आने वाले इन तीनों जनजातीय बंधुओं का सफर यकीनन प्रेरणादाई है। इन तीनों को सम्मानित कर कल्याण आश्रम के सभी कार्यकर्ताओं ने धन्यता की अनुभूति की। ■

लेकटाउन महिला समिति द्वारा राखी मेले का आयोजन

- शकुन्तला अग्रवाल, सह-संगठन मंत्री, महानगर महिला समिति

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूर्वांचल कल्याण आश्रम की लेक टाउन समिति ने दिनांक 5 अगस्त से 8 अगस्त 2023 तक त्रिदिवसीय राखी मेला का आयोजन गोकुल बैंक्वेट में किया । इस राखी मेला में राखी स्टॉल के साथ-साथ स्वादिष्ट जलपान के विभिन्न स्टॉल थे। अतिथियों ने सुस्वादु जलपान का खूब आनंद लिया। इस बार असम गोहाटी से भी कल्याण आश्रम संचालित वनवासी महिलाओं द्वारा बनाया हुआ सामान लेकर दो कार्यकर्ता बहनें भी आई थीं। लोगों ने उसे देखा और खरीददारी का पूरा आनन्द लिया। ■

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की ध्येययात्रा के दैदीप्यमान ध्येययात्री का शरीर रूप में मां भारती की गोद में विश्राम

- श्रीनिवासन, प्रचारक, भारतीय किसान संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व अखिल भारतीय सह सरकार्यवाह एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रद्धेय मदन दास देवी जी ने 24 जुलाई को बेंगलुरु में प्रात: 5 बजे अपना भौतिक शरीर त्याग दिया। अपने जीवनकाल में ही अक्षय कीर्ति अर्जित कर चुके श्री मदनदास जी 81 वर्ष के हो गए थे। अजातशत्रु, बहुआयामी व्यक्तित्व वाले मदनदास जी का जन्म 9 जुलाई 1942 को महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के करमाला में हुआ था। संयोग से सात वर्ष बाद 1949 में यह 9 जुलाई की तिथि ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना की तिथि बनी।

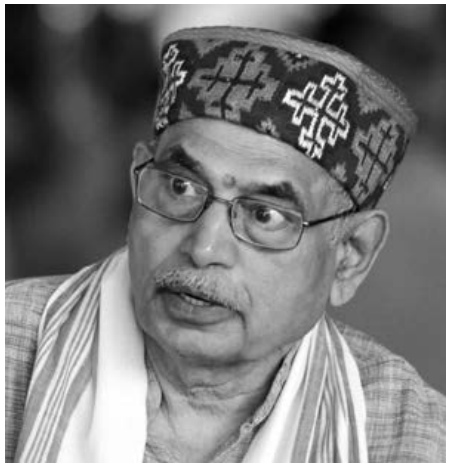

प्रारंभिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा के लिए पुणे के प्रसिद्ध कालेज बीएमसीसी में 1959 में प्रवेश लिया। एम.कॉम करने के बाद उन्होंने आईएलएस लॉ से एलएलबी की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ पूर्ण की। उन्होंने सीए की पढ़ाई भी पूरी की थी।पुणे में पढ़ाई के दौरान ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए।

1964 में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्य के साथ जुड़े, 1966 में वे मुंबई नगर इकाई के मंत्री बनाए गए, इस दौरान उन्होंने मुंबई नगर में कार्य को नवीन गति प्रदान की।1968 में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में वे पश्चिम क्षेत्र के संगठन मंत्री बने। 1970 में तिरुअनंतपुरम के राष्ट्रीय अधिवेशन में उन्हें राष्ट्रीय संगठन मंत्री का गुरुतर दायित्व दिया गया। इस दायित्व को उन्होंने 22 वर्षो तक यानि 1992 तक निभाया। इस दौरान उन्होंने हज़ारों कार्यकर्ताओं को गढ़ा, उन्हें नवीन दृष्टि दी और लाखों कार्यकर्ताओं के जीवन को छूआ।

इसके उपरांत वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख एवं अखिल भारतीय सह सरकार्यवाह भी रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विदेश विभाग के पालक कार्यकर्ता भी रहे। साथ ही राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की पहली सरकार के समय वे सरकार और संगठन के बीच समन्वय की भूमिका भी निभाते रहे।

श्रद्धेय मदनदास जी के जीवन और व्यक्तित्व को शब्दों में बाँधना बहुत कठिन कार्य है। वे एक आदर्श कार्यकर्ता, स्वयंसेवक और आजीवन मन कर्म वचन से कठोरव्रती संघ प्रचारक रहे।स्वयं के प्रति कठोर परंतु अन्य सभी के लिए सरल। जिन्होंने अपने प्रचारक जीवन के आलोक में असंख्य कार्यकर्ताओं को गढ़कर पूर्णकालिक और प्रचारक जीवन के लिए प्रेरित किया।

उनके जीवन में स्वाभाविक सहजता और सरलता थी जिसके कारण जो भी उनके संपर्क में एक बार आ गया वह जीवन पर्यंत उनके साथ जुड़ गया। व्यक्तियों को पहचान कर उन्हें उभारने की अद्भुत कला के धनी थे।

युवाओं के सामर्थ्य और शक्ति पर उन्हें अटूट विश्वास था और इस युवा शक्ति को संगठित और संस्कारित करके राष्ट्रीयता की ऊर्जा भरने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेवा और संस्कार उनके लिए सर्वोपरि थे। इसलिए उनके सान्निध्य में जो भी आया उनमें वे जीवन पर्यंत समाज सेवा की भावना जागृत करने का प्रयास करते थे।

श्रद्धेय मदनदास जी का चिंतन वैश्विक था, परंतु कार्य वे हमेशा स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रख कर ही करते थे। 'थिंक ग्लोबल, एक्ट लोकल' का मुहावरा प्रचलित होने के पहले ही वे उसे अपनी कार्यपद्धति में ले आये थे। इसी का परिणाम भी था कि वे जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान सहज ही कर देते थे। उनके पास उद्यमिता और आर्थिक जीवन के सुधार के लिए अनोखी दृष्टि थी। आज के आत्मनिर्भर भारत का मिशन हमें मदनदास जी के विचारों में झलकता है।

उन्होंने अपनी वैचारिक स्पष्टता के कारण हजारों कार्यकर्ताओं को तो जीवन दृष्टि प्रदान की, साथ ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे छात्रों के प्रवाहमान संगठन को वैचारिक आधार देते हुए कार्यकर्ताओं में संगठन के दर्शन को विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। कार्यकर्ताओं से उनका संबंध पारिवारिक था, इसलिए वे संगठन में कार्यकर्ता के काम की ही चिंता नहीं करते थे अपितु उसके पूरे जीवन के बारे में विचार करते थे। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि, प्रेम पूर्ण स्वभाव और आत्मीयता जैसे गुणों के चलते देश में हजारों कार्यकर्ता राष्ट्र और समाज की सेवा का व्रत लेकर आज भी कार्य कर रहे है।

उन्होंने कार्यकर्ताओं को केवल बातों को कह कर ही नहीं सिखाया, अपितु उन्होंने अपने जीवन में अपनी कही हुई बातों को उतार कर स्वयं को एक उदाहरण बना कर दिखाया, जिससे असंख्य कार्यकर्ताओं ने बहुत कुछ सीखा।

वे सहज ही कहते थे कार्यकर्ता छोटा या बड़ा नहीं होता अपितु दायित्व अवश्य परिवर्तित होता रहता है। इसका वे स्वयं उदाहरण रहे किसी भी दायित्व पर रहे परंतु उनका व्यवहार सदैव सभी के लिए समान था।

वे अक्सर कार्यकर्ताओं को कहते थे अपने जीवन को व्यवहारिकता पूर्वक, निर्भीकता पूर्वक और पारदर्शिता पूर्वक जीना चाहिए क्योंकि हम समाज का नेतृत्व करने वाले हैं।

व्यक्तियों के पारखी, संगठन-शिल्पी के रूप में उनका विराट व्यक्तित्व आज सर्वत्र दिखाई देता है। हर कार्यकर्ता में गुण दोष दोनों रहते हैं। आवश्यकता है उसके गुणों को गढ़कर उसको योग्य कार्य में निहित करना। इसी का परिणाम है कि उनके द्वारा गढ़े गए कार्यकर्ता शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, वाणिज्य, साहित्य और अन्य क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहे हैं।

नए परिवेश को तुरंत समझना, उसके अनुरूप स्वयं को ढालना, नए प्रयोगों को प्रोत्साहित करना, उन पर कड़ी निगरानी रखना और आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तन करना उनकी कार्यशैली की विशिष्ट पहचान थी।

एक छात्र संगठन को विश्व का सबसे बड़ा संगठन बनने और उसकी एक विशिष्ट कार्यपद्धति को देशव्यापी बनाना उनके संगठनात्मक कौशल को दर्शाता है।

साथ ही परिषद में आने वाले युवाओं को जीवन भर राष्ट्र कार्य की प्रेरणा देना, उनके जीवन में संघ का भाव निहित करते हुए संघ संचालित समाज जीवन के विविध कार्य को अंगीकार करने का संकल्प उत्पन्न करने का कार्य भी मदनदास जी ने सहज रूप से किया। वे अर्जुन और श्रीकृष्ण की भूमिका स्वयं निभाते रहे।

अपनी जागृत बुद्धि से और अपने शरीर से परिश्रम की पराकाष्ठा उन्होंने जीवन पर्यंत की। जीवन के अंतिम समय में भी आपकी जागृत बुद्धि और सबके लिए स्नेह का भाव जीवंत रहा।

श्रद्धेय मदनदास जी का जाना व्यक्तिगत, परिवार, समाज, संगठन और राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है।

अनेक कार्यकर्ताओं और अधिकारियों के साथ-साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया- 'मदन दास देवी जी के देहावसान से अत्यंत दुख हुआ है। उन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्रसेवा में समर्पित कर दिया। उनसे मेरा न सिर्फ घनिष्ठ जुड़ाव रहा, बल्कि हमेशा बहुत कुछ सीखने को मिला। शोक की इस घड़ी में ईश्वर सभी कार्यकर्ताओं और उनके परिवारजनों को संबल प्रदान करे। ओम शांति!'

राष्ट्र कार्य की ध्येय यात्रा के देदीप्यमान ध्येय यात्री का शरीर रूप में विश्राम हो गया है परंतु उनके द्वारा दिखाया गया मार्ग सदैव हम सबको राष्ट्र कार्य में पूर्ण ऊर्जा से कार्य करने की प्रेरणा देता रहेगा। उनके स्वप्न पूरे करने के लिए हम सबको उनके त्याग पूर्ण जीवन से सीखना होगा।

वे सदा कहते थे- 'हम एक इस जन्म के अलावा भारत माता को दूसरा और दे भी क्या सकते हैं? इसलिए यह जन्म देश के लिए। अगला जन्म व्यक्तिगत सुखों के लिए।'

ऐसा मानने वाले मदनदास जी का यश अनंत काल तक हमारी स्मृतियों का भाग रहेगा।

कल्याण आश्रम परिवार कर्तव्यपथ के अविरल राही मदन दास देवी जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित व्यक्त करता है।

स्मृति शेष, कृति शेष... ■

कविता .....

स्वतंत्रता दिवस का पुकार

- अटल बिहारी वाजपेयी

पन्द्रह अगस्त का दिन कहता- आज़ादी अभी अधूरी है,
सपने सच होने बाक़ी हैं, रावी की शपथ न पूरी है!

जिनकी लाशों पर पग धर कर आजादी भारत में आई,
वे अब तक हैं खानाबदोश ग़म की काली बदली छाई!

कलकत्ते के फुटपाथों पर जो आँधी-पानी सहते हैं,
उनसे पूछो, पन्द्रह अगस्त के बारे में क्या कहते हैं?

हिन्दू के नाते उनका दुख सुनते यदि तुम्हें लाज आती,
तो सीमा के उस पार चलो सभ्यता जहाँ कुचली जाती!

इंसान जहाँ बेचा जाता, ईमान ख़रीदा जाता है,
इस्लाम सिसकियाँ भरता है, डालर मन में मुस्काता है।

भूखों को गोली नंगों को हथियार पिन्हाए जाते हैं,
सूखे कण्ठों से जेहादी नारे लगवाए जाते हैं।

लाहौर, करांची, ढाका पर मातम की है काली छाया,
पख़्तूनों पर, गिलगित पर है ग़मगीन गुलामी का साया।

बस इसीलिए तो कहता हूँ आज़ादी अभी अधूरी है,
कैसे उल्लास मनाऊँ मैं? थोड़े दिन की मजबूरी है।

दिन दूर नहीं खंडित भारत को पुन: अखंड बनाएँगे,
गिलगित से गारो पर्वत तक आजादी पर्व मनाएँगे।

उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें,
जो पाया उसमें खो न जाएँ, जो खोया उसका ध्यान करें।

आदरणीय भगवती जी बागला के 90 वर्ष संपूर्ति पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता हावड़ा महानगर द्वारा प्रेषित अभिनंदन पत्र

बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कारों में रचे पगे आदरणीय भगवती जी का जीवन अनेक विशेषताओं का समुच्चय है। सादगी, सरलता, निरहंकारिता, सौजन्यता, सहजता और कर्मशीलता के आप जीवंत प्रतिमान है। राष्ट्रभक्ति आपके रोम-रोम में बसी है। वनवासी सेवा और संगठन कार्य आपके जीवन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। महानगर के अधिकांश कार्यकर्ता 1978 में कल्याण आश्रम के कार्य को अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त होने के बाद ही कार्य से जुड़े किंतु माननीय भगवती जी बहुत पहले ही संगठन से जुड़ गए थे।

कल्याण आश्रम के तत्कालीन संगठन मंत्री आदरणीय प्रसन्न दामोदर सप्रे जी जब धन संग्रह हेतु कोलकाता आते तब आप सदैव उनके साथ घूम-घूम कर संपर्कित व्यक्तियों एवं परिवारों को कल्याण आश्रम के बारे में बताते हुए संग्रह किया करते थे। पूर्वी भारत, उत्तर-पूर्व भारत एवं अंडमान में कल्याण आश्रम संगठन तथा सेवा कार्यो के प्रतिष्ठाता माननीय बसंत राव जी भट्ट के साथ आपने बहुत काम किया। आपके कदम सदैव अपने गंतव्य की दिशा में गतिमान रहे। आपके शांत और संतुलित व्यक्तित्व में आदर्श कार्यकर्ता का स्वरूप मूर्तिमान है। अपनी सकारात्मक सोच और ध्येयनिष्ठा के कारण पारिवारिक और व्यवसायिक दायित्वों का कुशल निर्वाह करते हुए संगठन के विस्तार में अहम भूमिका निभाई है।

एक आदर्श कार्यकर्ता, कुशल संगठनकर्ता एवं समर्पित व्यक्तित्व के रूप में आपकी छवि हम सबके मन मस्तिष्क में सदैव विद्यमान रहती है। अत्यंत अनुशासनप्रिय, व्यवहारिक एवं सुलझे हुए भगवती जी ने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। आपके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपके आचार, विचार और व्यवहार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आपके वचन और कर्म में पार्थक्य नहीं है। इस उम्र में भी आपकी सक्रियता और कर्मठता यह सिद्ध करती है कि उम्र सिर्फ शरीर की होती है; मन की नहीं। उनके भीतर आज भी युवाओं जैसा प्रेरणादायक जज्बा है।

हम सब कार्यकर्ताओं में वे बड़े लोकप्रिय हैं और परिवार में अत्यंत आदरणीय। कोलकाता हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं का सौभाग्य है कि हमें आपका स्नेह, संरक्षण और सान्निध्य मिला है। वनवासी सेवा और संगठन कार्यों के प्रति आपकी निष्ठा, आस्था और समर्पण भाव बेजोड़ रहा है। पदलिप्सा और यश लोलुपता से आप सदैव कोसों दूर रहे। आपका त्यागमय, सेवापरायण जीवन हम सबके लिए प्रेरणादाई है। नौवें दशक की परिसंपन्नता और दसवें दशक के मंगल प्रवेश पर आपको सादर नमन करते हुए हम सब आपके मंगलमय, निरामय और सुखमय जीवन की कामना करते हैं। पुनश्च आपको शत शत सहस्राधिक नमन!

प्रसन्नता और कृतज्ञता से आपूरित
कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ता ■

कथाव्यास मृदुलकांत जी द्वारा कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन

- शशि मोदी, सह-संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर

कथा विश्राम में मात्र एक दिन ही शेष रह गया। कथावाचक आचार्य श्री मृदुल कांत शास्त्री की शिवकथा जन-जन के मन की कथा बन चुकी थी। कथा का प्रवाह श्रोताओं को कभी कैलाश लेकर चला जाता, तो कभी हिमालय की गोद में झुलाता, तो कभी द्वादश ज्योतिर्लिंग का दर्शन कराता। आचार्य श्री ने यह कथा पूर्वांचल कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय कार्य में सहयोग देने के लिए नि:स्वार्थ भाव से सुनाई। कथा वाचन जब व्यावसायिक हो चुका है ऐसी परिस्थितियों में आचार्य श्री के संत स्वभाव और संवेदनशील हृदय ने कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं को सहज भाव से कथन कह कर भावाभिभूत कर दिया। कथा विश्राम की पूर्व संध्या पर कार्यकर्ताओं के लिए प्रसाद की व्यवस्था पहले से ही थी। परंतु आचार्य श्री का मार्गदर्शन भी मिला। यह तो मानो शिवकथा का महाप्रसाद बन गया।

षष्ठम दिवस की कथा - विश्राम के उपरांत रात्रि लगभग 7 बजे पुन: आचार्य श्री कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन के लिए स्टेडल कथा मंडप में विराजे। आपके साथ वनवासी कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय प्रशिक्षण टोली के सम्मानित सदस्य माननीय कृपाप्रसाद सिंह जी भी उपस्थित थे। व्यवस्था समिति तथा अन्य कार्यकर्ताओं का परिचय कोलकाता-हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख श्री संदीप चौधरी के द्वारा कराया गया। तदुपरांत आचार्य श्री ने अपने संबोधन में कहा कि कोई भी संगठन तभी यशस्वी बन पाता है, जब उसके कार्यकर्ता एक दूसरे को आगे बढ़ाने में तत्पर हों। और यह भाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके विभिन्न प्रकल्पों में बखूबी दिखाई पड़ता है। आपने कहा कि राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए आयोजित इस कथा में वे भी एक कार्यकर्ता के रूप में स्वयं को अनुभव कर रहे हैं। यह कहते-कहते आचार्य श्री भावुक हो उठे। उनका कंठ अवरुद्ध हो गया। आचार्य श्री की विनम्रता की पराकाष्ठा उस समय सभी के लिए आदर्श बन गई जब उन्होंने माननीय कृपाप्रसाद सिंह जी के चरण स्पर्श करते हुए कहा कि वे स्वयं भी विद्यार्थी परिषद के सदस्य हैं।

उन्होंने प्रश्नोत्तर सत्र में सभी कार्यकर्ताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। कार्यकर्ताओं के लिए सबसे मूल्यवान प्रश्न था कि इस कथा का अमूल्य प्रसाद क्या है? उससे भी बहुमूल्य उत्तर था कि नए कार्यकर्ताओं का जुड़ना। व्यक्ति संग्रह ही हमारे संगठन का मूल-मंत्र है। आचार्य श्री का स्वनाम धन्य मृदुल स्वभाव, रसमयी कथा, और मित्रवत् उपदेश सभी कार्यकर्ताओं और श्रोताओं के मन मस्तिष्क पर सदा सदा के लिए अंकित हो गये।

सभी कार्यकर्ताओं की ओर से आचार्य श्री को ये पंक्तियाँ समर्पित हैं -

यह तुमने क्या किया कि सहसा
प्राणों में तूफान आ गया।
यह तुमने क्या दिया जिसे पा
गरल सुधा मधु-दान पा गया? ■

अनुकरणीय

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर समिति

संजू दास का अतुलनीय योगदान

दुनिया में आने का मतलब,
कुछ देना है कुछ दे जाना।

पंक्तियाँ याद दिला देती हैं संजू दास के त्याग और समर्पण का। यों तो आपका नाता पूर्वांचल कल्याण आश्रम के साथ पुराना और आत्मीयता से भरा है। समय-समय पर आप वनवासी भाई-बहनों के लिए सामान्य घरेलू कार्य करते हुए अर्जित अपनी आय का अधिकांश अंश समर्पित करती रही हैं। शिवकथा जब समर्पण की कथा बन गई तो पुनः आप से पीछे नहीं रहा गया। अपनी आय का एक बड़ा भाग आपने वनवासी क्षेत्रों में जलाशय के निर्माण के लिए दे दिया। तिनका-तिनका जोड़कर घोंसला बनाने में जो आनंद खुले आसमान में उड़ने वाले पक्षी को होता है, वही आनंद संजू जी को अथक परिश्रम से अर्जित आय को जनजाति क्षेत्रों के विकास में समर्पण करने से आता है।

मैं तूफ़ानों मे चलने की आदी हूँ..
तुम मत मेरी मंजिल आसान करो..
हैं फूल रोकते, काँटें मुझे चलाते..
मरुस्थल, पहाड़ चलने की चाह बढाते..

शिवकथा जब राष्ट्रकथा बन गई

पत्थरों की राह पर चलना सीखो,
सच्चाई की आग में तपना सीखो।
राष्ट्र धर्म के लिए जिंदगी निछावर हो,
मातृभूमि की आन पै मिटना सीखो।।

भारत भूमि राम और कृष्ण की जन्मभूमि है। कथा श्रवण की और वाचन की परंपरा पौराणिक काल से चली आ रही है। कभी राम कथा, कभी कृष्ण कथा, कभी देवी चरित्र माहात्म्य कभी शिव कथा। भारत की पावन धरा पर कथा वाचन-श्रवण की धारा निरंतर बहती रही है। इधर कुछ समय से कथा आयोजन व्यावसायिक भी हो गया। कथा वाचक एक-एक कथा का लाखों रुपये में दक्षिणा लेने लगे हैं। जब कथा आयोजन का उद्देश्य राष्ट्र हित के लिए हो तो सामान्यतः कथा-वाचक पैर पीछे खींच लेते हैं।

प्रख्यात कथावाचक आचार्य मृदुल कांत शास्त्री को जब यह पता चला कि यह कथा वनवासी क्षेत्र में छात्रावास निर्माण के लिए है, वनवासी भाई-बहनों को राष्ट्रीय धारा में जोड़ने के लिए है, उनके संस्कारों की रक्षा के लिए है, राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए है तो आपने इस कथा के वाचन के लिए कुछ भी दक्षिणा लेने से मना कर दिया।

फूल महकें यही तो ख़्वाहिश थी,
एक पौधा क्या ?
पूरा बाग ही लगा दिया आपने।

भारत का परिवेश युवाओं का देश

युवा समिति की सक्रिय कार्यकर्ता प्राची हमीरवासिया ने शिवकथा की सर्वांगीण सफलता और प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राची का एनीमेशन का अपना काम है। कथा आमंत्रण के वीडियो बनाना, कथा स्थल पर लगाई गई प्रदर्शनी को आकर्षक रूप देना आदि कार्यों में अनथक परिश्रम किया। यह कार्य केवल सात दिनों का नहीं था बल्कि शिव कथा के आयोजन की कल्पना के प्रारंभ से ही वे इस कार्य को निःस्वार्थ भाव से करती रहीं। स्वार्थान्धता के इस युग में प्राची का निःस्वार्थ समर्पण सचमुच प्रेरणादाई है। ■

बोधकथा.....

माँ से महान कोई नहीं है

एक बार एक राजा के महल में एक व्यापारी दो गायों को लेकर आया। दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं।

व्यापारी ने राजा से कहा- "महाराज! ये दोनों गायें माँ - बेटी हैं, परन्तु मुझे यह नहीं पता है कि दोनों में माँ कौन है और बेटी कौन है। मैं इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है। मैंने अनेक स्थानों पर लोगों से यह पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में माँ-बेटी की पहचान नहीं कर पाया। बाद में मुझसे किसी ने यह बताया है कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र बुद्धि का है और यहाँ पर मुझे अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा इसलिए मैं यहाँ पर चला आया। कृपया मेरी समस्या का समाधान किया जाए!"

यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने लगे। मंत्री अपने स्थान से उठकर गायों की ओर गया। उसने दोनों का गहराई से निरीक्षण किया किंतु वह भी नहीं पहचान पाया कि वास्तव में कौन माँ है और कौन बेटी है। अब मंत्री को बड़ी दुविधा हुई। उसने राजा से माँ बेटी की पहचान करने के लिए एक दिन की मोहलत माँगी। घर आने पर वह बेहद परेशान रहा। उसकी पत्नी इस बात को समझ गई। उसने जब मंत्री से परेशानी का कारण पूछा तो उसने सारी बात बता दी। यह सुनकर उसकी बुद्धिमती पत्नी बोली- "अरे! बस इतनी सी बात है। यह तो मैं भी बता सकती हूँ।"

अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को वहाँ अपने साथ लेकर गया जहाँ गायें बँधी थीं। मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे अच्छा भोजन रखा। कुछ ही देर बाद उसने माँ व बेटी में अंतर बता दिया। लोग चकित रह गए।

राजा ने पूछा कि उसने कैसे पहचाना कि कौन माँ और कौन बेटी है तो मंत्री की पत्नी बोली - "पहली गाय जल्दी-जल्दी खाने के बाद दूसरी गाय के भोजन में मुँह मारने लगी और दूसरी वाली ने पहली वाली के लिए अपना भोजन छोड़ दिया। ऐसा केवल एक माँ ही कर सकती है यानि दूसरी वाली माँ है। माँ ही बच्चे के लिए भूखी रह सकती है। माँ में ही त्याग, करुणा, वात्सल्य, ममत्व के गुण विद्यमान होते हैं।"

इस दुनिया मे माँ से महान कोई नही है। माँ के चरणों में भगवान को भी झुकना पड़ता है। माँ ममता का सागर नहीं बल्कि महासागर है! ■

अमृत वचन

अचिंतित बात कहनी नहीं चाहिए और सुचिंतित बात पर डट कर रहना चाहिए।

- अचार्य महाश्रमण

जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

हमें दैनिक जीवन में राष्ट्र सबसे पहले इस भाव को दृढ़ता के साथ व्यवहार में लाना होगा।

- नरेंद्र मोदी

यजमानों द्वारा पूजन अर्चन

महादेव के पूजन-अर्चन से, आतप विनश जाते हैं;
भोलेनाथ शिव शंकर जपकर, भवसागर से तर जाते हैं।।

गोसाबा छात्रावास की बच्चियों द्वारा स्तोत्र पाठ

द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं पावन, नाम मात्र ही सुख का कारण;
गोसाबा की छात्राओं का, स्तोत्र-गान था अतिमनभावन।।

Printed Matter

Book-Post

If undelivered please return to :

Purvanchal Kalyan Ashram
161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata - 700007
Phone : +91 33 4803 4533
Email : kalyanashram.kol@gmail.com